DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email-kdkbharti08@gmail.com
B.A Part--1Paper-2.Date-13-08-2020

समाज सुधारक के रूप मेंस्वामी दयानन्द सरस्वती की भूमिका की विवेचना------

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चकोटि के एक निर्भीक दूत एवं समाज सुधारक थे।भारत के पुनर्जागरण की शताब्दी,*19* वीं शताब्दी में जागरण की ज्योति जलाने वाले महापुरुषों में अग्रगण्य स्वामी दयानन्द सरस्वती एक सच्चे महात्मा थे।केवल यही नहीं कि कुछ स्वार्थी अनुयायी ही उन्हें महात्मा कहने लगे हो वरन् वे बाल-ब्रहाचारी एवं महान योगी भी थे।स्वामी जी संस्कृत, अरबी,हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान तथा एक ओजस्वी वाक्ता थे।उनके लेखों में भी उनके वचनों का सा ही ओज विद्यामान था। जकारिया ने सत्य ही कहा है कि स्वामी दयानन्द जाति और वर्ग के भेद को समाप्त करना चाहते थे।वे धर्म में एकता लाकर अपने आर्य धर्म को सब धर्मों के स्थान पर एक राष्ट्रीय धर्म बनाना चाहते थे।

स्वामी दयानन्द ने बौद्धिक पुनरुद्धार तथा सामाजिक सुधार के लिए एक शक्तिशाली आन्दोलन आरम्भ किया।उन्होंने धर्मशास्त्रीय तथा सामाजिक विषयों में बुद्धिवाद तथा स्वतंत्रता का पक्षपोषण किया।भारत के राजनीतिक दर्शन तथा संस्कृति के इतिहास में उन्हें सदैव ही महत्वपूर्ण स्थान दिया जायेगा।उन्होंने आर्य समाज की स्थापना जिसके द्वारा युग प्रवर्तन सम्भव हुआ।इसी आर्य समाज ने भारतीय राजनीति आन्दोलन को अनेक महान नेता तथा अनुयायी प्रदान किये।

धर्म-सुधारक के साथ-साथ वे एक समाज सुधारक भी थे।उन्होंने जीवनपर्यन्त यह प्रयत्न किया कि देश तथा समाज बुराइयों से मुक्त हो।उस समय हिन्दू समाज के दुर्दिन थे।वह अन्धविश्वासों ,कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के बोझ के नीचे दबा जा रहा था।इस प्रकार दुर्बल होती हुई भारतीय सभ्यता को निगल जाने के लिए पाश्चात्य सभ्यता धीरे धीरे धीरे अपना जाल फैला रही थी। ऐसे समय में महर्षि दयानंद ने वैदिक संस्कृति का प्रचार किया जिससे भारत की रक्षा हुई।उनका अटूट विश्वास तथा दैवी प्रेरणा जिसके द्वारा उनके कार्यों ने सफलता प्राप्त की,उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है--"
विश्व अन्धविश्वास एवं अज्ञान की कृत्रिम जंजीरों में जकड़ा हुआ है।मेरा अवतरण उस जंजीर को तोडने के लिए तथा गुलामी से स्वतंत्र कराने के लिए हुआ है।स्वामी दयानन्द के सामाजिक विचारों को हम निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं-----

१.जाति प्रथा का विरोध
२.वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन
३.मूर्ति पूजा का विरोध
४.कुप्रथाओं का विरोध
५.आन्दोलन का श्री गणेश
६.शिक्षा के लिए गुरुकुल की व्यवस्था
७.नारी शिक्षा तथा अधिकारों का समर्थन

१.जाति प्रथा का विरोध----उन दिनों जाति प्रथा ऐसे कुमार्ग पर पड़ गई थी और उसका इतना जोर था कि सारा हिन्दू समाज छिन्न भिन्न हो रहा था जिससे लाभ उठाने के लिए अन्य धर्मों के प्रचारक ताक लगाये बैठे थे। निम्न जाति के लोगों को उच्चवंशीय लोग हीन और अस्पृश्य समझते थे।उनका मत था कि वेद भी सर्वसाधारण के लिए उसी प्रकार प्रकाशित है तथा उसी प्रकार उपलब्ध होने चाहिए जैसे परमात्मा द्वारा प्रदान की गई अन्य सब प्राकृतिक वस्तुएँ।केवल वही निर्बुद्धि एवं मूर्ख व्यक्ति शूद्र है जिसे पठन पाठन का ज्ञान नहीं है।

२.वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन----जाति प्रथा एवं अस्पृश्यता जैसी बुराइयों के प्रबल विरोधी होते हुए भी स्वामी दयानन्द वर्णाश्रम व्यवस्था को केवल सुधारना चाहते थे, न कि समाप्त करना।वे केवल इतना चाहते थे कि जन्म के आधार पर वर्ण निश्चित नहीं किया जाना चाहिए यह अनुचित है।

३.मूर्ति पूजा का विरोध-----स्वामी दयानन्द मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे।वे मानते थे कि मूर्ति पूजा के सहारे अन्धविश्वास और पाखण्ड बढ़ते हैं।उन्होंने मूर्ति पूजा की बहुत आलोचना की और इस प्रथा को समूल नष्ट करने की मांग किया।वे मानते थे कि उनका उद्देश्य मानव जाति का उद्धार करना है अतः पाखण्ड का वे प्रत्येक समाज में विरोध करते थे।

४.कुप्रथाओं का विरोध----वैदिक धर्म तो स्वामी दयानन्द के हदय में व्याप्त था, परन्तु सच्चा और शुद्ध वैदिक धर्म वह धर्म है जो वेदों के अनुसार था अतः वैदिक धर्म को शुद्ध रखने के लिए वे अपने घुस आयी कुप्रथाओं का विरोध करते थे और इसे अनुचित मानते थे कि विधवा विवाह की अनुमति न देकर महिलाओं पर बलात वैधव्य के नष्ट को थोपा जाय।उन्होंने दहेज प्रथा को समाज के लिए अभिशाप बताकर उसके उन्मूलन का प्रयत्न किया तथा विधवाओं को पुनर्विवाह का समर्थन करके उसके जीवन को सुखी एवं यातनामुक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया।

आगे, धन्यवाद।

2020-08-13
© From vivo Note

Scanned with CamScanner